International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 30-10-2024, Accepted: 29-11-2024, Published: 14-12-2024
Volume 6, Issue 2, 2024, Page No. 8-10

बोड़ो लोकगीतों में अभिव्यक्त राष्ट्रभक्ति का स्वर

जयन्त कुमार बोरो[1], तेलेम कमलावती देवी[2]
[1] हिन्दी विभाग, मणिपुर अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, इम्फाल, मणिपुर, भारत
[2] प्रोफ़ेसर, भारतीय भाषा विभाग हिन्दी, मणिपुर अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, इम्फाल, मणिपुर, भारत

सारांश
लोक साहित्य समाज को सिखाने और सीखने का प्रमुख साधन है। यह मनुष्य को समाजवाद के मार्ग की ओर ले जाता है। सबसे पहले जन्म के बाद हर व्यक्ति परिवार, समाज और बाहरी वातावरण से ज्ञान प्राप्त करता है जिसमें लोक साहित्य की प्रमुख भूमिका होती है और लोकगीत इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। लोकगीतों के माध्यम से किसी समुदाय की राष्ट्र के प्रति भावना को आसानी से जागृत किया जा सकता है। क्योंकि लोकगीत आम लोगों के साथ गहराई से तौर जुड़ी होती है। बोड़ो लोकगीतों में राष्ट्रवादी विचारधारा का मार्मिक वर्णन मिलता है। यह उनकी जातीय पहचान, सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना को व्यक्त करता है। इनेक लोकगीतों में व्यक्त इस भावना को दीर्घ काल से प्रेरणा के रूप में लिया जाता रहा है। भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान लोकगीत राष्ट्रीयता की चेतना फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

मूल शब्दः शिक्षण, समाज, चेतना, राष्ट्रीयता, भूमिका इत्यादि

लोकगीत किसी एक व्यक्ति विशेष की नहीं अपितु एक जाति या समुदाय की सामुहिक अभिव्यक्ति होती है। साहित्य के अन्य विधाओं में लेखक या विचारक के अपनी स्वयं की अनुभूति या भावना छिपी रहती है। परन्तु लोक साहित्य में ऐसी भावना छिपे होने की सम्भावना नहीं होती। यह सदैव सामुहिकता के साथ जुड़ा हुआ होता है। लोक की ओर उन्मुख हुये बिना कोई और साहित्य मानवीय भावना को प्रकट नहीं कर सकता। यदि बोड़ो लोकगीतों को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अवलोकन किया जाए इसमें राष्ट्रीय भावना सो ओतप्रोत गीत में मिलते है जो ओज गुण से परिपूर्ण है। राष्ट्रभक्ति सम्बन्धी गीतों में साधारण लोक को सदैव मातृभूमि के प्रति समर्पित होने की बात कहीं गई है तथा देश को शत्रु मुक्त करने के लिए रण क्षेत्र के लिए तैयार रहना चाहिए।

अध्ययन का उद्देश्य
लोकगीत मानव समुदाय के जीवन का एक अभिन्न अंग रहा है। सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टि से लोकगीतों का अपना विशिष्ट स्थान है। बोड़ो समुदाय में भी लोकगीत का विषेश महत्त्व रहा है जहाँ समाज–संस्कृति के विविध रूप प्रतिफलित हुआ है। प्रस्तुत आलेख में बोड़ो लोकगीतों में अभिव्यक्त राष्टभक्ति का स्वर का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन का महत्त्व
लोकगीत जिसका सीधा सम्बन्ध किसी भी जाति और समुदाय का अभिन्न रुपों में होता है। इसमें उस जाति विशेष की भाव–विचार, भावनाएँ, स्वाभिमान आदि सभी सम्बद्ध होता है। बोड़ो लोकगीत में उनके भाव–भगिमाएँ विशेष रुप से अभिव्यक्त हुई है। एक समाज या संगठन जिसका सम्बद्ध समाज की जमीन से जुड़ी हुई होती है उनके लिए लोकसाहित्य व लोकगीतों का विशेष महत्त्व होता है। लोकगीत में जो भावनाएँ अन्तर्निहित होती है वह उस समाज या जाति की अपनी मौलिक भावनाएँ होती है।

शोध सामाग्री
प्रस्तुत आलेख की शोध सामाग्री विविध प्रकार के लेखों और साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त किया गया गया है। लोक साहित्य से सम्बन्धित ग्रन्थों में से आलेख को पुर्ण करने हेतु सहयोग प्राप्त हुआ है।

शोध विधि
प्रस्तुत लेख की विषय वस्तु के अध्ययन के लिए विशलेषणात्मक, ऐतिहासिक एवं समीक्षात्मकता पद्धति को अपनाया गया है।

विषय प्रतिपादन
बोड़ो शब्द जिसका उच्चारण अंग्रेजी में Bodo या Boro के रुप में किया जाता है। बोड़ो असम प्रांत की सबसे प्राचीन जनजाति में से एक है। यह जनजाति पूरे असम प्रान्त मे फैला हुआ है। इस जनजाति की अपनी परम्परा, रीति आदि प्राचीन काल से चली आ रही है। इनकी कुछ प्राचीन परम्पराएँ लोकगीतों के माध्यम से मुखरित हुई है। बोड़ो लोकगीतों को मूल्यांकन के दृ-ष्टिकोण से विविध श्रेणियों में विभक्त कर इसका अनुशीलन किया जा सकता है।
तत्कालीन और वर्तमान बोड़ो समाज एवं संस्कृति में काफी परिवर्तन आ चुका है। यह समय का ही परिणाम है। समय के प्रवाह में इसमें अन्तर दिखना स्वाभाविक है। लेकिन उनके लोकगीतों में सहज–सरल भाव सम्पृक्त है। वे अपनी भावनाओं और विचारों को सरल रुप में प्रकट करने में अधिक विश्वास रखते है न कृतिम रुपों में। बोड़ो लोकगीतों के अनुशीलन में राष्ट्रभक्ति परक गीतों को मिलते है। राष्ट्रभक्ति परक लोकगीतों में मातृभूमि के प्रति सूपुतों को समर्पित होते हुए भावों को देखा जा सकता है। उनके राष्ट्रभक्ति परक गीतों में मातृभूमि को हमेशा समृद्ध होकर रहने की बात कहीं गई है। एक उदाहरण दृष्टव्य हैः

आय आंगो हादाब
दैमा दैसा आय जिरि जिरि
बंफां लाइफां आय सारि सारि
सोमोनांथाव, नायबाय थाथाव
सोरजिरिगिरि सोरजिनाया।
आय आंगो हादाब
सिरि मोनदिया बिमा दाबोनो

उन्दुलांखो मानो गोदो गोदो।
सिखांदो सिरि मोनदो,
गोदोनाय हारिखौ दिखांलांदो।
हादोरखौ फोसाब लांदो
आय आंगो हादाब।

अर्थात् ओ! हमारी मातृभूमि तुम समृद्ध हो। तुमसे ही मन्दध्वनियुक्त सरसर झरने बहते है, चारो ओर पेड़–पौधो से युक्त है। हे ! मातृभूमि तुम कितनी हर्षवर्द्धक हो और आखों का संतोष प्रदान करती हो। हे मातृभूमि ! हे मा ! तुम अभी तक गहरी निद्रा में क्यूँ मग्न हो, तुम जागो और सुप्त अवस्था में पड़ी देश वासियों को जागृत करो।
उक्त गीत में राष्ट्र के प्रति मातृभूमि को सजग रहने की कामना करते हुये देखा गया है। क्योंकि अगर मातृभूमि जागृत रहेगी, तो उसके सन्तानें भी जागृत रहेगी। इस गीत में बोड़ो पुत्रों को देश तथा मातृभूमि की रक्षा के लिए सदैव जागृत होकर रहने के लिए आवाहन किया गया है। इसमें मातृभूमि की सुन्दरता और मनमोहकता पर भी विचार किया गया है। वहीं दूसरे एक अन्य राष्ट्र भक्ति परक लोकगीत में बोड़ो पुत्रों को देश सेवा के हेतु आवाहान कर क्षत्रिय बन कर तथा शत्रुओं से साथ लोहा लेने हेतु आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया है। एक उदाहरण दृष्टव्य हैः

फै ऐ बर' फिसाफोर नोंसोर फै,
दावहा नांगो थांदिनि।
थुंग्रि लानानै बिखा फोरदानानै
दुसमनफोरखौ होसोदिनि।
आदा बासिराम जोहोलाव
नोंलाय गराइया दाब्रायलांदो।
आखा बुगदावनानै नोङो होसोलांदो।
नायहर हनै नायहर दुसमनफ्रालाय,
हाइलादो–हुइलादो फैलायगौ।
नाङा नाङा नांलायगोन हाजो गफायाव
थैया थैलायगोन दुसमना,
देरहालायगोन जों बर फोरा।
दागि आदा बासिराम जोहोलाव दागि नौङो,
जोहोलावनि फिसा, बिरनि फिसा नोंलाय उथ्रि होगोन
आदा दावहाराम जोहोलाव नोंबो दावगा लांदो,
नोंबो लामायाव बेंस हैदो।

अर्थात् युद्ध में भाग लेने के लिए बोड़ो पुत्रों को आवाहान करते हुए कहते है कि हे बोड़ो पुत्रों हाथों में तलवार और ढाल लेकर बाहर आओ और शत्रुओं को पराजित करों। हमारे वीरनायक भाई बासिराम अश्व में विराजमान होकर आगे खड़े है। शत्रु शक्तिसम्पन्न होकर हमसे लड़ने के लिए आगे आ रहे है उनको सख्ती से खदेड़ो। बेड़े होशियारी से लड़ते हुए शत्रु सैनिकों को यमलोक पहुचा दो। हम यह रण का खेल अवश्य जीतेंगे। दुसमना (दुश्मन) जैसे विदेशी शब्दों के प्रयोग से गीत को अधिक प्रभावशली बनाने का प्रयास किया गया है।
बोड़ो लोकगीतों में ओज गुण से युक्त गीत सुन्दर रुप से मुखरित हुआ है। यद्ध सम्बन्धी वातावरण में ओज वर्णन महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है। एक एक उदाहरण दृष्टव्य हैः

जोहोलाव जालिया गथफोरेजों,
जोहालाव जालिया गथफोर जों
जोंलाय रावखौबो गिया गिया
दाहाल थुंग्रियानो जोंनि गेलेग्रा मुवा मुवा।
जोबोलाव.....गिया गिया।
सोरबा सुथुरा गोग्लोब फैब्ला जोंनि राइजोआव
दानगोन सुगोन गावगोन
जोंलाय रावखौबो गिया गिया।

अर्थात् हम वीरनायकों के वीर सपूत है। हम किसी भी प्रकार के भय से अपरिचित एवं अनजान है, ढाल और तलवार हमारे खेलने के खिलोने है। यदि कोई शत्रु हमारी मातृभूमि पर आक्रमण करेगा, वह कट कर टूकड़ों में विभक्त हो जाएगा। क्योंकि हम भय से अपिरिचित एवं अनजान है।
बोड़ो लोकगीत वीर रस से ओत–प्रोत है। एक काल्पनिक योद्धा बासिराम के माध्यम से युद्ध का सजीव चित्रण किया गया है। एक उदाहरण दृष्टव्य हैः

गराइ दाब्रायदो
बासिराम जोहोलाव,
गंगार सुबाया फैलायगौ।
आखाया बुगदावदो बासिराम जोहोलाव,
लागामा बोगदावदो बासिराम जोहोलाव,
गंगार सुबाया फैलायगौ।

अर्थात् हे बासिराम तुम एक वीर नायक हो, रण के घोड़े को तेजी से आगे बढ़ाओं। भूतिया सैनिक कूच कर सूके है एड़ी लगाकर लगाम को कसो और युद्ध को घोड़े को आगे बढ़ाओं। क्योंकि वे आ गये है। उक्त गीत में बोड़ो योद्धाओं का भूतान जैसे विदेशी आक्रमणकारियों के साथ युद्ध करने का वर्णन किया गया है। साथ ही यह देखने को मिलता है कि वे लोग युद्ध में घोड़े विशेष में रुप से प्रयोग किया करते थे जिसे युद्ध में घोड़े को लागम खींच कर आगे बढ़ाने बात कहीं गई है।
उपसंहारः
उक्त गीत के अवलोकन यह स्पष्ट हो जाता है कि बोड़ो जनजाति युद्ध प्रिय जाति रही है। प्रत्येक देश की सभी जातियाँ किसी न किसी रुप में शत्रुओं के युद्ध करना पड़ा। युद्ध में वीरता और कौशल का चित्रण स्पष्ट परिलक्षित होता है। प्रस्तुत गीत काल्पनिक रुप से दो वीर पात्रों का नाम उल्लेख किया गाय है– बासिराम और दावहाराम। इन दोनों के वीरो के आगमन को युद्ध में सैनिकों में उत्साह वृद्धि के दृष्टकोण से किया गया है। ताकि सैनिकों का मनोबल बना रहे। लोकसाहित्य मनुष्य को सिखाने और सीखने का प्रमुख साधन है। यह मनुष्यों को सामाजिकता की राह की ओर ले जाता है। सबसे पहले जन्म के पश्चात् प्रत्येक व्यक्ति परिवार, समाज और बाहरी वातावरण से ज्ञान लाभ करता है जिसमें लोकसाहित्य की प्रमुख भूमिका होती है। लोकगीत इसका सबसे उत्तम उदाहरण है। एक समुदाय का राष्ट्र के प्रति समर्पित भावना को लोकगीतों के माध्यम से सहजता से जगाया गया है। क्योंकि लोकगीत आम जनाता के जुड़ी हुई होती है। बोड़ो लोकगीतों में राष्ट्रवादी विचारधारा का मार्मिक वर्णन मिलता है। यह उनके जातीय अस्मिता, सामाजिक एवं राष्ट्रीय सम्वेदना को अभिव्यक्त करता है। बोड़ो लोकगीत में व्यक्त इस भावना को सदियों से प्रेरणा स्वरुप ग्रहण किया जाता रहा है। लोकगीतों के द्वारा राष्ट्र सम्बन्धी विचारधाराओं को सहजता से लोगो तक सम्प्रेषित किया जा सकता है, यह उनके दैनदिन जीवन से जुड़ी हुई होती है जिसे वे सहजता से हृदयंगम कर सकते है।
''''''

सन्दर्भ सूची

1. बोड़ो लोकगीत गीतः संकलन –उथ्रिसार बसुमतारि, सम्पादक एवं अनुवादक– डॉ. रमेश भारद्वाज, पृष्ठ– 2.
2. वहीं, पृष्ठ– 7.
3. वही, पृष्ठ– 4.

4. वहीं, पृष्ठ– 6.
5. बरो, मधुराम. जारिमिननि नोजोराव बर' थुनलाइ (A History of Bodo Literature), गुवाहाटीः एन.एल पाब्लिकेशन, पानबजार, 2007 ई.
6. बसुमतारी, उन्थिसार. (संकलन कर्ता), डॉ. रमेश भारद्वाज (सं. एवं अनु.), बोड़ो लोकगीत, नई दिल्लीः गांधी हिन्दुतानी साहित्य सभा, 2004 ई.
7. ब्रह्म, लक्षेश्वर. बैसागु आरो हारिमु, कोकराझारः एन.एल पाब्लिकेशन, 2017 ई.
8. लाहरी, मनोरंजन. बोरो थुनलाइ जारिमिन (History of Bodo Literature), कोकराझारः अलाइरन पाब्लिशर, असम, 1991 ई.
9. Basumatary, Bakul Chandra. *Bodo Civilization In India*, Kokrajhar: Mr. Daorao Dekhreb Narzary, Maibong Nwgwr, Santatola, BTC (Assam), 2009.
10. Basumatary, Bakul Chandra. *BathouAnd Religious: Transitions of the Bodos*, Kokrajhar: WordsAnd Words, R**.**N.B Road, 2018.
11. Basumatary, Phukan.A*n Introduction of Bodos Languague*, New Delhi: Mittal Publication, 2005.
12. Boro.Anil (Dr.). *Folk Literature of Bodos*, Guwahati: N.L. Publication,A**.**R**.**B Road, Panbazar, 2008.
13. Boro.Anil Kumar.A *History of Bodo Literature*, New Delhi: SahityaAkademi, H.O, Rabindra Bhawan, 35, Ferozeshah Raod, 2010.
14. Bordoloi BN. *Tribes ofAssam.* Guwahati:Assam Institute of Research for TribalsAnd Scheduled Castes, 1987.
15. Brahma K. (Dr.)A*spects of Social Customs of the Bodos*, Kokrajhar: Published by Shri Chiranjib Brahma, Gossaigion,Assam. 1989.
16. Brahma MM. *Folksongs of the Bodos*, Guwahati University, 1960.
17. Brahma Kameswar (Dr.).A *Study In Cultural Heritage of The Boros*, Guwahati:Assam Institute of Research for TribalsAnd Scheduled Castes, 1998.
18. Chatterji, Suniti Kumar. *Kirata-Janakriti*, Kolkata: Published by Mihir Kr. Charkrabarti. General Secretary, TheAsiatic Society, I Park Street, 1974.
19. Doley D (Dr.), Dr. MN Das. *Plain Tribes ofAssam:A Profile*, Guwahati:Assam Tribal DevelopmentAuthority, Dr. R.R. Road, 1998.
20. Dutta, Birendranath. *Folksong ofAssam*, New Delhi: Sangeet NatakAkademi, 1974.
21. Endle, Rev. Sidney. *The Kacharis*, Guwahati: Bina Library, College Hostel Road,Assam, 2007.